बुढ़उनू चुप्पी साधौ

(अवधी कविता संग्रह)

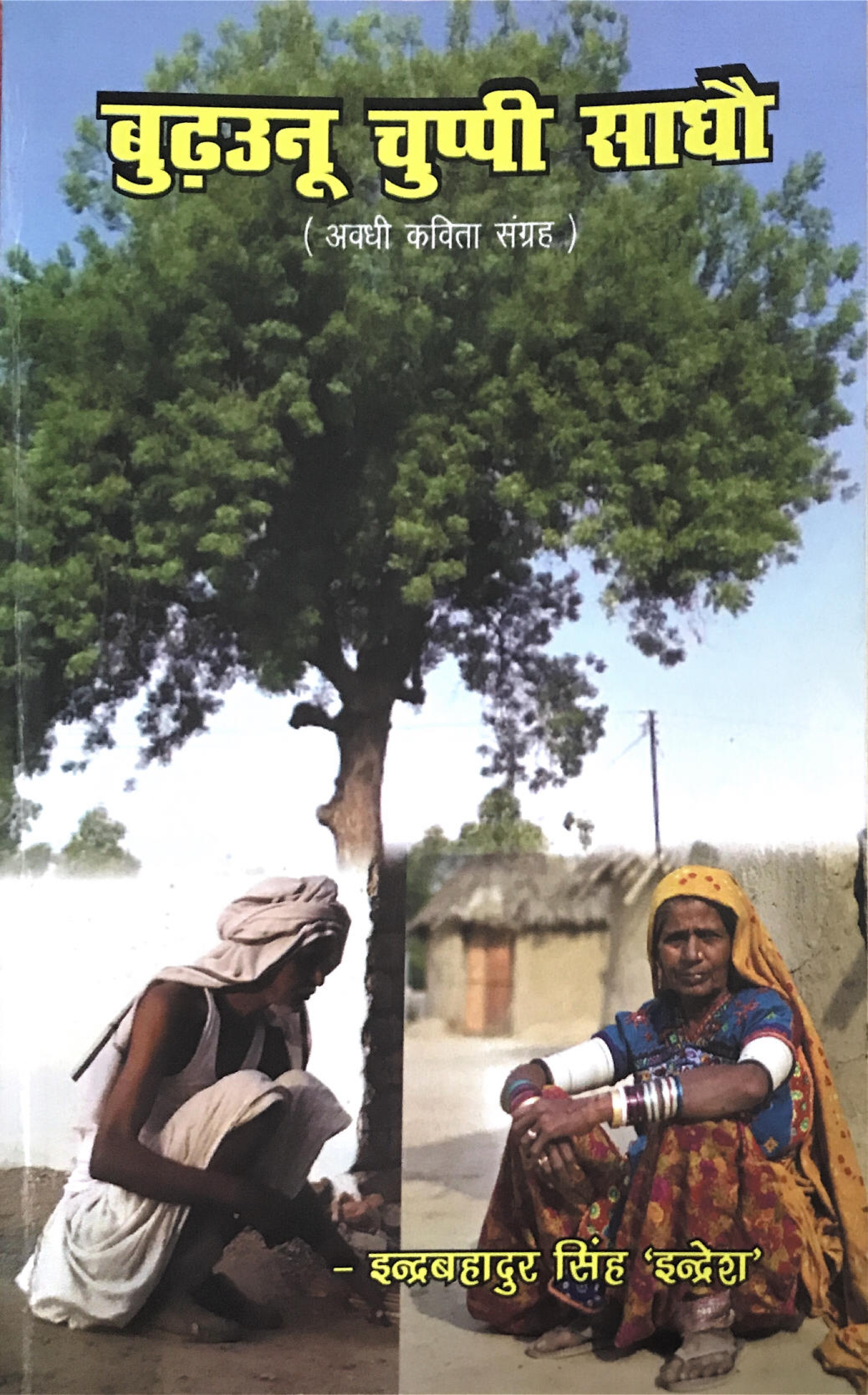

- इन्द्रबहादुर सिंह 'इन्द्रेश'

बुढ़उनू चुप्पी साधौ

(अवधी कविता संग्रह)

इन्द्रबहादुर सिंह 'इन्द्रेश'

जीवन-परिचय

नाम :- इन्द्र बहादुर सिंह भदौरिया

उपनाम :- इन्द्रेश भदौरिया

जन्म तिथि :- 24 दिसम्बर 1954

पिता :- श्री शीतला बक्श सिंह भदौरिया

माता :- स्व. श्रीमती ईश्वरी देवी

पत्नी :- स्व. श्रीमती सरला सिंह

पुत्र :- अमित सिंह भदौरिया, आलोक सिंह भदौरिया

शिक्षा :- कला स्नातक

स्थाई पता :- ग्राम- मोहम्मद मऊ, पोस्ट-कठवारा, जिला-रायबरेली (उ.प्र.)- 229 001

सम्मान :- कई साहित्यक, सामाजिक संगठनों द्वारा 12 पुरस्कार, सम्मान, अभिनन्दन, प्रशस्ति पत्रादि

प्रकाशित कृतियाँ :- 1. घटाओं के रंग (गीत संकलन) 2. नखत-3 (अवधी कविता संकलन) 3. बसि यहै मड़इया है हमारि 4. पीड़ित मन मधुगान गा रहा 5. कुलआ चरित हास्य भण्डारा 6. गजब कै अंधेरिया है (अवधी हास्यव्यंग कविता संग्रह)

अप्रकाशित कृतियाँ- 1. तरंग शतक (छकड़ा संग्रह) 2. कलियों की मुस्कान (बाल गीत संग्रह) 3. लक्ष्य प्राप्त करते वही (दोहा संग्रह) 4. श्रृंखला में आते हैं (छंद संग्रह) 5. महात्मा विदुर (खण्ड काव्य संग्रह)

पत्र पत्रिकायें जिसमें रचनायें प्रकाशित हुईं- जोन्हइया, अवध ज्योंति, जनता- राज, प्रगति, संयोग साहित्य, अवध मेल, साध व्यूज, कवि कुंभ, शक्ति हुँकार, रूप की शोभा, बालहंस, बाल भारती आनन्देरेखा इत्यादि।

समर्पन

पिता श्री स्व. शीतला बख्श सिंह

के श्रीचरणों में सादर

समर्पित!

अभिमत

इन्द्र बहादुर सिंह 'इन्द्रेश' अवधी के वरिष्ठ रचनाकार है। वे विगत तीन दशकों से साहित्य साधनारत हैं। यद्यपि वे बहुत अरसे से काव्य रचना कर रहे हैं किंतु उनकी ख्याति 'बस यहै मड़इया है हमारि' नामक अवधी काव्य संग्रह के प्रकाशित होने के बाद हुई। इस अवधी काव्य संग्रह की देश की सीमाएं लाँघकर नेपाल तक पहुंच गयी और नेपाल के कई चैनलों से अवधी रचनाओं का प्रसारण हो चुका है। प्रचार प्रसार से दूर अवधी साधना में लीन इन्द्रेश जी की अवधी कविता का फलक बहुत ही व्यापक है। वे बैसवारी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां से अवधी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि स्व. चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमई काका' जुड़े हैं। वे रमई काका से प्रभावित भी हैं यही कारण है कि उनकी रचनाओं में काका की छाप दिखाई देती है।

इन्द्रेश जी का नया अवधी काव्य संग्रह 'बुढ़उनू चुप्पी साधौ' एक परिपक्व कृति के रुप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है। शीर्षक से ही ज्ञात होता है यह कृति अवधी के खास तेवर व्यंग से लैस है। इन्द्रेश जी का जीवन गाँव में ही बीता है इसलिए गांवों के प्रति उनकी दृष्टि बहुत ही पैनी है। आज गाँव भी ग्लोबल हो चुके हैं। सूचना क्रांति के चलते गाँवों का भूमण्डलीकरण हो गया है। जिन लोगों के मन मस्तिष्क में गाँवों के अतीत का बिम्ब घूमता है वे भ्रम में हैं। गाँवों में सादगी सरलता और अभाव या दुःख दैन्य का साम्राज्य अब नहीं रहा। गावों की राजनीति बहुत ही जटिल हो गयी है। तमाम सरकारी सुविधाओं का लाभ लेने वाले ग्रामीण अब पहले से अधिक चंट हो गये हैं। गांव जो कभी कृषि संस्कृति और श्रम संस्कृति के लिए जाने जाते थे। अब वहां भी अराजकता और अकर्मण्यता व्याप्त हो गयी है। कृषि अलाभकारी होने के नाते युवा पीढ़ी का खेती से मोहभंग हो गया है। अनेक विसंगतियों के बीच गाँव का जीवन जिया जा रहा है। ऐसे में यदि कोई पुत्र अनुभवी बुजुर्ग युवाओं को नैतिकता की बात समझाता है तो उसे युवा पीढ़ी का आक्रोश झेलना पड़ता है। जैसा कि कृति शीर्षक रचना में दर्शाया गया है। -

देखि दिनन का फेर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

मची हवै अँधेर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

जब जवानि तुम रहेव वऊ दिन यादि करौ,

नहिं कोहू का डेरु बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

रहें मरमहित लरिका बच्चा मेहरारू सब,

कीन्हे बड़ा बखेरु बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

जेहिकी खातिन बहुत कमायो रातिउ-दिन,

दीन्हिनि वई खदेर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

तुम तौ रहेव है सूधि कबौ नहिं किहेव दगा,

हित चाहेव सब केर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

चलै फिरै से लहतंगर द्याखत है मनई,

देखि ल्यात मुँह फेरि बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

जेहिका जानत रहेव मरमहित सेवा करिहैं,

रहे हैं आँखि तरेरि बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

का करिहौ अब तौ सबकुछ द्याखै चुप्पेन,

लीला कलजुग केर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

अब तौ भजन करौ ईसुर का बइठे बइठे,

अब सुनिहैं, वई टेर बुढ़उनू चुप्पी साधौ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'कविता क्या है' निबंध में कविता के कई मानक लिखा है लेकिन लोक मंगल का भाव सब में मूल है। कवि का भी यही मानना है कविता सुनकर मानव का मन हर्षित हो जाय और वह अपने कष्ट भूल जाये। यही कविजा का उद्देश्य होना चाहिये-

जेहिका सुनिके मनई मन मा कुछ स्वाचै का मजबूर हुवै।

जब तलक हुवै यह कबित्तहाउ सब दुख दलिद्दुर दूरि हुवै।

कविता तभी अच्छी मानी जाती है जब उसमें देश काल को ध्यान में रखकर लिखी गयी हो। देश की राजनीतिक दुरुपताओं का वर्णन करने में कवि भी पीछे नहीं रहा। वह लिखता है-

घर घर मागत वोट हमारे नेता जी।

मन मा लीन्हे खोट हमारे नेता जी।

***

आवा चुनाव अब तो तुम अइहौ वोट मागै,

मुला फिरि कबहू मुह देखावो तो जानी।

आज हमारी सभ्यता संस्कृति को पश्चिमी सभ्यता वाले देश अपना रहे हैं लेकिन हम अपनी सभ्यता संस्कृति से कोसों दूर भाग रहे हैं। आहत होकर इन्द्रेश जी लिखते हैं।

हर गाँव गली मेला ठेला औ घर घर यहै देखाय परत।

पछुआ बयारि ते है लगाव पुरवा बयारि ते है नफरत।

***

कहाँ से कहाँ तक पहुचिगा जमाना।

कहाँ तक सुनाई अब यहिका फसाना।

है छोटे बड़ेनमा नहीं कउनौ अन्तर,

हलौ हाय म अबतो मनई दिवाना।

इसी तरह संग्रह की हर कविता अपने में कोई न कोई संदेश देकर सभी को रास्ता दिखाने का काम कर रही है। छुआछूत को लेकर लिखी ये पंक्तियाँ देखें-

मुला अब बदलौ आपनि रीति।

करौ अब तुम अछूत ते प्रीति।

मानिके उनका आपन अंग।

चलौ सबका लइके निज संग।

माँ की ममता पर-

लरिकन की चोट से ज्यादा तौ महतारी कै ममता चोटात।

लरिकन का पेट भरा राखत महतारी बिन खायेन अघात।

किसानों का दर्द छुट्टा जानवर व नील गाय को लेकर-

लीलगाह साँड़ छूटि अउर बूढ़ी गइया।

फसल हैं चौपट किहे करी का मइया।

बाँदर अउ मूस सब अब पाछे परिगें।

ख्यात हरेरि अब तो सब हरहा चरिगें।

इन्द्रेश की कविताओं में जहाँ जीवन की विसंगतियों का सटीक वर्णन मिलता वहीं कहीं कहीं हास्य से कवितायें और भी ज्यादा मुखरित हो उठती हैं। यथा-

तुम बहुतै नाच नचउतू है

तुम्हरेन कारन अम्मा बप्पा भइया भउजी से लड़ि डारा।

तुम्हरे कारन घर मा हमरे होइगा संपति का बंटवारा।

***

घर मा मूस हैं डण्डै प्यालत,

तुम लरिकन कै फउज ढक्यालत,

कउन दुस्मनी हवो निकारत,